न केवल चाहमानों की सामरिक शक्ति को नष्ट कर दिया अपितु संपूर्ण हिंदुस्तान पर भारी विपत्ति ढहा दिया। शासकों तथा जनता का मनोबल पूरी तरह टूट गया तथा देश भयाक्रान्त हो गया। चौहान शक्ति के टूट जाने के बाद उसने हाँसी ; सिरसा ; कुहराम ; समना आदि पर बड़ी आसानी से अपना अधिकार कर लिया। मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज के पुत्र गोविंदराज को अजमेर के ऊपर अपनी अधीनता में राज्य करने का अधिकार दे दिया। दिल्ली का राज्य इसी प्रकार तोमरवंश को सौंप दिया गया। इन्द्रप्रस्थ में उसने अपने विश्वासपात्र सहायक कुतुबुद्दीन ऐबक के नेतृत्व में एक सेना रख दी जिसका काम हिंदूशासकों से संधि की शर्तों को मनवाना था। गोरी गजनी वापस लौट गया।

7 1194 ई० में गोरी ने पुनः भारत पर आक्रमण किया। इस आक्रमण का उद्देश्य गहड़वाल नरेश जयचंद्र को पराजित करना था जो कन्नौज तथा बनारस का शासक था। मुस्लिम लेखक उसे महानतम शासक बताते हैं। चंदावर का युद्ध (कन्नौज के समीप) जयचंद्र और मुहम्मद गोरी के बीच हिं युद्ध हुआ ; जिसमें जयचंद्र की पराजय हुई बताया जाता है कि जयचंद्र अपनी सेना के साथ बहुत वीरतापूर्वक लड़ा तथा उसकी विजय सुनिश्चित थी। किन्तु दुर्भाग्यवश उसकी आँख में घातक तीर लग गया तथा वह गिर पड़ा। हिंदू सेना में भगदड़ मच गई तथा तुर्कों की विजय हुई। इसके बाद उसने कुछ अन्य प्रमुख नगरों पर भी अधिकार कर लिया। इस विजय के परिणामस्वरूप तुर्क साम्राज्य बिहार की सीमा तक जा पहुँचा।

Scanned with CamScanner

1195-96 ईसवी में मुहम्मद गौरी ने भारत पर पुनः आक्रमण किया तथा बयाना को घेर डाला। यहाँ भट्टि राजपूत शासक कुमारपाल की राजधानी थी। वह पराजित हुआ तथा तुर्कों ने थंगीर तथा विजयमन्दिरगढ़ के किले पर अधिकार कर लिया। यहाँ की सेना का भार बहाउद्दीन तुगरिल को दिया गया। यहीं से एक लंबे घेरे के बाद ग्वालियर के दुर्ग पर भी अधिकार कर लिया।

मुहम्मद गौरी के लौटने के बाद उसके सहायक कुतुबुद्दीन ऐबक तथा एक सेनानायक बख्तियार खिलजी ने बुंदेलखंड, बिहार, बंगाल आदि की विजय की। ऐबक ने चंदेल राजा परमर्दि को पराजित कर कालिंजर, महोबा तथा खजुराहो के महत्वपूर्ण सामरिक दुर्गों पर अधिकार कर लिया। बख्तियार खिलजी ने पूर्वी भारत की ओर अभियान करते हुए ओदंतपुरी, विक्रमशिला तथा नालंदा के विश्वविद्यालयों को ध्वस्त कर दिया। इस प्रकार तुर्क साम्राज्य प्रायः संपूर्ण उत्तरी भारत में फैल गया।

1206 ई० में शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी भारत से गजनी वापस जाते हुए सिंधु नदी के तट पर खोखर नामक जनजातियों द्वारा मार डाला गया। निःसंदेह वह एक महान योद्धा तथा उच्चकोटि का सेनानायक था। उसने अपनी योग्यता के बल पर भारत में तुर्की साम्राज्य की स्थापना की। उसकी मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक नामक व्यक्ति उसके भारतीय साम्राज्य का स्वामी बना।

<u>मूल्यांकन</u> - इसमें संदेह नहीं है कि मुहम्मद गौरी गजनी के महमूद की भाँति एक महान सेनानायक नहीं था। महमूद कि उसमें महमूद जैसी प्रतिभा न थी तथापि राजनीतिक सुधारों में वह महमूद से अधिक योग्य था। महमूद विजय और धनसंग्रह करने में लीन रहा और मुहम्मद गौरी ऐसा साम्राज्य स्थापित करने में सफल हुआ जो शताब्दियों तक स्थायी रहा। डॉ ईश्वरी प्रसाद के शब्दों में " महमूद की विजय का उद्देश्य धन लूटना; परंतु भूमि प्राप्त न करना, मूर्तियों को तोड़ना, परंतु विजय

पाना नहीं था। जब वह जब इनमें सफल हो गया उसने भारत के असंख्य लोगों की चिंता छोड़ दी।" तथापि मुहम्मद गोरी ने शुरु से ही साम्राज्य स्थापित करने का निश्चय किया था; और वह तुर्क सत्ता की केवल स्थायी रूप से स्थापित करने में सफल रहा।

सर डब्ल्यू० डब्ल्यू० हण्टर के विचारों के अनुसार "वह महमूद गजनवी की भाँति इस्लामधर्म का युद्धप्रिय सामंत नहीं था; परंतु वह क्रियात्मक विजेता था। उसके हर के अभियानों के लक्ष्य मंदिर नहीं थे; परंतु प्रदेश थे।"

Scanned with CamScanner